

अपरदन चक्र पुं. (तत्.) भूवि. अपरदन की युवा, प्रौढ़ा, जीर्णावस्था इन तीन प्रमुख अवस्थाओं का वह क्रम जिसमें से होकर गया भूखंड समतल हो जाता है।

अपरदित वि. (तत्.) [अप+रदित] जो अपरदन क्रिया से युक्त हो या जिसका अपरदन हुआ हो।

अपरदी शैल वि. (तत्.) भूवि. वह शैल जो अन्य शैलों के अपरदित शैलों के मलबे से बनता है।

अपरपक्ष पुं. (तत्.) 1. दूसरा पक्ष 2. भारतीय महीने का कृष्णपक्ष 3. उल्टी ओर विधि. 4. न्यायालय में प्रतिवाद पक्ष।

अपरबहुगुणित वि. (तत्.) [अपर+बहुगुणित] कृषि. वह जीव जिसके शरीर की कोशिकाओं में गुणसूत्रों के दो से अधिक समूह पाये जाते हों तथा वे भिन्न-भिन्न जातियों से संबंधित हों।

अपरब्रह्म पुं. (तत्.) [अपर+ब्रह्म] ब्रह्म का वह रूप जो परब्रह्म से भिन्न साकार एवं सगुण होता है।

अपरभा पुं. (तत्.) साहि. एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 6 वर्ण होते हैं तथा जगण व सगण क्रमशः होते हैं।

अपरभाव वि. (तत्.) [अपर-भाव] 1. किसी से या अन्य से भिन्न होने का भाव 2. दूसरा भाव 3. भेद, अंतर

अपररूप पुं. (तत्.) [अपर+रूप] 1. पहले से भिन्न रूप 2. रसा. गंधक, या कार्बन आदि किसी तत्व का दो या दो से अधिक रूपों में इस प्रकार पाया जाना जो रासायनिक व भौतिक गुणधर्मों की दृष्टि से परस्पर भिन्नता लिए हों।

अपररूपता स्त्री. (तत्.) एक ही तत्व का ऐसे दो या अधिक रूपों में पाया जाना जिन रूपों के भौतिक और रासायनिक गुणधर्म एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न हों, जैसे- कार्बन के दो अपर रूप हीरा और ग्रेफाइट graphite allotropy

अपरलोक पुं. (तत्.) 1. इस लोक से भिन्न लोक, दूसरा लोक 2. स्वर्ग

अपरवक्त्र पुं. (तत्.) [अपर+वक्त्र] 1. दूसरा वक्त्र 2. छंद एक प्राचीन अर्धसमवर्णिक छंद जिसके विषम चरणों में ग्यारह वर्ण होते हैं तथा सम चरणों में क्रमशः नगण, दो जगण व रगण के योग से कुल बारह वर्ण होते हैं।

अपरवर्णता स्त्री. (तत्.) भौति. प्रदीप्ति अथवा प्रकाश का पुनःप्रकीर्णन जिसमें उत्सर्जित प्रकाश का तरंगदैर्घ्य (और इस कारण उसका रंग) अवशोषित प्रकाश के तरंगदैर्घ्य से भिन्न होता है, इसे रामन प्रभाव भी कहते हैं allochromy

अपरस पुं. (तत्.) हथेली और तलवे का एक चर्म रोग जिसमें चमड़ी सूख जाती है और खुजली होती है पुं. (तद्.) 1. विरसता 2. आत्मरस, आत्मानंद।

अपरस्थानिक वि. (तत्.) शा.अर्थ. अन्य स्थान वाले। भूवि. वे शैल जिनके घटक अन्यत्र से आए या लाए गए हों। allotropic

अपरांग वि. (तत्.) [अपर+अंग] जो किसी अन्य का अंग हो।

अपरांग व्यंग्य वि. (तत्.) [अपरांग-व्यंग्य] काव्य. गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य के भेदों में से एक भेद जिसमें एक व्यंग्यार्थ किसी दूसरे व्यंग्यार्थ का अंग बन जाता है।

अपरांत पुं. (तत्.) [अपर+अंत] 1. पश्चिमी सीमा का अंतिम भाग 2. पश्चिमी सीमांत का कोई देश 3. महाराष्ट्र के उत्तर कोंकण क्षेत्र का एक प्राचीन नाम।

अपरांतक पुं. (तत्.) [अपरांत+क] 1. पश्चिमी सीमांत प्रदेश का भाग 2. पश्चिमी सीमांत प्रदेश का निवासी 3. पश्चिमी सीमांत प्रदेश

अपरा स्त्री. (तत्.) 1. अध्यात्म विद्या के अतिरिक्त अन्य लौकिक विद्या 2. स्तनी मादाओं के भ्रूणीय तथा गर्भाशयी ऊतकों से बनी संरचना जिसके माध्यम से माता तथा भ्रूण के बीच रुधिर-पोषण तथा ऑक्सीजन आदि का आदान-प्रदान होता है 3. पश्चिम दिशा।